कबीर दास पर निबंध Essay On Kabir Das In Hindi

https:/www.essayonhindi.in

कबीर दास

कबीर दास का जन्म सम्वत् 1455 (सन् 1398 ई.) में हुआ था। जनश्रुति के अनुसार उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ जिसने लोकलाज के भय से उन्हें त्याग दिया। एक जुलाहा दम्पति को वे लहरतारा नामक तालाब के किनारे पड़े हुए मिले जिसने उनका पालन-पोषण किया। वे ही कबीर के माता-पिता कहलाए। इनके नाम थे नीमा और नीरू। कबीर की मृत्यु 120 वर्ष की आयु में सम्बत् 1575 (1518 ई.) में मगहर में हुई थी।

कबीर हिंदी साहित्य के महिमामण्डित व्यक्तित्व हैं। कबीर के जन्म के संबंध में अनेक किंवदन्तियाँ हैं। कुछ लोगों के अनुसार वे रामानन्द स्वामी के आशीर्वाद से काशी की एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे, जिसको भूल से रामानंद जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया था। ब्राह्मणी उस नवजात शिशु को लहरतारा ताल के पास फेंक आयी।

कबीर के माता- पिता के विषय में एक राय निश्चित नहीं है कि कबीर "नीमा' और "नीरु' की वास्तविक संतान थे या नीमा और नीरु ने केवल इनका पालन-पोषण ही किया था। कहा जाता है कि नीरु जुलाहे को यह बच्चा लहरतारा ताल पर पड़ा पाया, जिसे वह अपने घर ले आया और उसका पालन-पोषण किया। बाद में यही बालक कबीर कहलाया।

कबीर ने स्वयं को जुलाहे के रुप में प्रस्तुत किया है -

"जाति जुलाहा नाम कबीरा
बनि बनि फिरो उदासी।'

कबीर पन्थियों की मान्यता है कि कबीर की उत्पत्ति काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के मनोहर

संत कबीर दास

- हिंदी साहित्य के महान कवि

- कबीर दास जी का जन्म काशी के लहरतारा नामक क्षेत्र में हुआ था।
- यह हमारे भारतीय इतिहास के एक महान कवि थे।
- इन्होंने हिन्दू माता के गर्भ से जन्म लिया और एक मुस्लिम अभिभावकों द्वारा इनका पालन–पोषण किया गया।
- दोनों धर्मों से जुड़े होने के बावजूद उन्होंने किसी धर्म को वरीयता नहीं दी।
- उन्होंने अपना पूरा जीवन मानव मूल्यों की रक्षा और मानव सेवा में व्यतीत कर दी।
- वे स्वामी रामानंद के सबसे चहेते शिष्य थे।
- कबीर दास जी के भजन और दोहे आज भी घर–घर में बजाये जाते हैं।
- सुखनिधन, होली अगम, आदि जैसी इनकी रचनाएँ बेहद प्रचलित हैं।

© HindiKiDuniya.com

“दुःख में सुमिरन सब करे सुख में करै न कोय, जो सुख में सुमिरन करे दुःख काहे को होय।”

- Kabir Das

Yourहिन्दीQuotes

AWESOME ज्ञानी

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय!
जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय!!

अर्थ: इस दोहे माध्यम से कबिर कहते कि जब मैं इस संसार में बुराई खोजने के लिए निकला तो मुझे कोई बुरा दिखई न दिया और जब मैंने मनरूपी द्वार अर्थात अपने ह्रदय में झाँककर देखा तो मुझे प्रतित हुआ कि मुझसे बुरा तो इसमें कोई है ही नहीं!!